

भास्कर खास

वॉशिंगटन यूनिवर्सिटी के कंप्यूटर साइंस डिपार्टमेंट की टीम का कंसप्ट, ज्यादा पावर लेने वाले कंपोनेंट को हटाया

भारतीय मूल के प्रोफेसर ने बनाया सोलर एनर्जी से चलने वाला मोबाइल; बैटरी की जरूरत नहीं, रेडियो तरंगों से भी होगा चार्ज

एजेंसी/वॉशिंगटन

अमेरिका के वैज्ञानिकों ने ऐसा मोबाइल हैंडसेट बना लिया है जो सोलर एनर्जी से चलता है। इसमें किसी तरह की बैटरी की जरूरत नहीं रहेगी। परंपरागत मोबाइल हैंडसेट जितनी एनर्जी की खपत करते हैं उसका एक अंश ही इस मोबाइल को चलाने में खर्च होता है। वॉशिंगटन यूनिवर्सिटी के कंप्यूटर साइंस फैकल्टी के प्रोफेसर श्याम गोलाकोटा के मुताबिक हम ऐसा सेलफोन बनाना चाहते थे जो बिल्कुल भी पावर का इस्तेमाल न करे। आईआईटी मद्रास से बीटेक करने वाले गोलाकोटा ने मैसाचुसेट्स इंस्टिट्यूट से मास्टर्स और पीएचडी की है।

मोबाइल डिजाइन करने वाली टीम के मुताबिक इसे दो तरह से चार्ज किया जा सकता है। अनाज के आकार की सोलर पैनल बनाई

एक्सपर्ट्स और यूजर्स को परफॉर्मेंस पर भरोसा नहीं



इस टेक्नोलॉजी के सामने आने के बाद टेक वर्ल्ड के लोग और मोबाइल यूजर्स कई तरह के सवाल उठा रहे हैं। टेक एक्सपर्ट्स का कहना है 'मोबाइल पावर इस्तेमाल नहीं कर रहा है तो जरूर उसका परफॉर्मेंस कमजोर होगा। स्क्रीन ब्राइटनेस में भी कमी आएगी।' वहीं यूजर्स का कहना है 'पावरफुल बैटरी होने के बाद भी मोबाइल मुश्किल से ऑपरेट हो पाते हैं। हताशा होने लगती है ऐसे में यह बिना बैटरी के कितना कारगर होगा। यदि मोबाइल का पूरा बैक ही सोलर पैनल वाला होता तो पावर कुछ बढ़ जाती।'।

गई जो इसे चार्ज करती है, वहीं दूसरा तरीका है रेडियो तरंगों से चार्जिंग। प्रोफेसर गोलाकोटा ने बताया कि हम अगर वाकई में चाहते हैं कि एनर्जी की खपत कम से कम हो तो पर्यावरण

से एनर्जी लेनी होगी। इसलिए हमें इसकी डिजाइनिंग पर काफी काम करना पड़ा।

टीम के एक और सीनियर मेंबर प्रोफेसर जोशुआ स्मिथ ने बताया 'सेलफोन ऐसा

डिवाइस है जिसपर आज ज्यादातर लोग निर्भर हैं। इसलिए हमने ऐसी डिवाइस बनाई जिसका इस्तेमाल बैटरी के बिना किया जा सके। हमने जो कंसप्ट सोचा था उसका नतीजा बेहतरीन मिला है। भविष्य में ये टेक्नोलॉजी रोजमर्रा में काम आने वाले डिवाइस पर प्रभाव डालेगी। दरअसल टीम ने मोबाइल हैंडसेट बनाने में उस एलिमेंट को हटा दिया जिसमें सबसे ज्यादा पावर खर्च होती थी। यह एलिमेंट इंसान की आवाज को (एनालॉग) को डिजिटल डाटा में बदलता है, यही डाटा ट्रांसमिट होता है।'

इसे बनाने में ऑफ द शेल्फ चीजों (सॉफ्टवेयर/सर्विस) का इस्तेमाल हुआ है। ये सॉफ्टवेयर मार्केट में मौजूद नहीं होते। इन्हें मोबाइल निर्माता कंपनियों से सीधे खरीदा जाता है। इस टेक्नोलॉजी के कमर्शियल इस्तेमाल की कोई जानकारी नहीं दी गई है।